© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

'प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक मूल्य'

सुमन बाला

मुंषी प्रेमचंद जी हिन्दी युगप्रवर्तक माने ज ाते है उनके सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास साहित्य की सबसे समृद्ध धरोहर है। प्रेमचंद जी को साहित्यकारों ने 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से विभूषित किया था। उपन्यास का अर्थ अध्यायों या प्रकरणों में लिखी हुई ऐसी कल्पित और बड़ी आख्यायिका जिसमें अनेक पात्र विस्तृत व सुसम्बद्ध घटनाएं हो। उपन्यास को गुजराती में ' नवल कथा' मराठी में 'कादम्बरी' और बांग्ला में 'नावेल' कहते है।

साहित्यक रचनाओं में सामाजिक मूल्यों का विषेष महत्व हैं इन मूल्यों के अनुसार चलना व इन्हें निभाना भी एक चुनौती भरा कार्य है। समाज से सम्बन्ध रखने वाला सामाजिक होता है। सामाजिक दो शब्दों के योग से बनता है समाज+इक। इसका अर्थ है– ''समाज से जड़ा हुआ''

हम जब भी समाज में परिवर्तन चाहते है तो हमारे सामाजिक मूल्य हमारे मार्ग में बाधा उत्पन्न करते है तब ऐसे समय में हमारा सामाजिक वातावरण व हमारे मूल्यों में संघर्ष सा पैदा होने लगता है। समय में प्रत्येक साहित्यकार समाज के संघर्ष, परिस्थितियों दृष्टिकोण व विसंगतियों को अपने साहित्य में उकेरता है।

साहित्य समाज का दपर्ण होता है अर्थात् जैसा काल, समाज, धार्मिक व राजनीतिक वातावरण होगा, उसी प्रकार का साहित्य सृजन होता है। किसी भी काल का साहित्य वहॉ की हर परिस्थितियों व मूल्यों को अपने अंदर उतार कर एक आईने का काम करता है।

हिन्दी उपन्यास के विकास क्रम का अध्ययन करने के लिए हम 'उपयन्यास सम्राट' प्रेमचंद को केन्द्र बिन्दु मान ले तो इसे तीन चरणों में विभक्त कर सकते है।

- प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास
- प्रेमचंद कालीन हिन्दी उपन्यास
- प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास

प्रेमचंद पूर्व साहित्यकारों ने तिलस्मी और ऐयारी पूर्वक उपन्यास लिखकर समाज की पूर्णतः मनोरंजन किया। परन्तु मंषी प्रेमचंद जी सर्वप्रथम ऐसे उपन्यासकार थे जिन्होंने उपन्यास साहित्य को तिलस्मी और ऐयारी से बाहर निकालकर उसे ऐसे वास्तविक भूमि पर ला खड़ा किया। उन्होंने अपनी रचनाओं में जनसाधारण की भावनाओं, परिस्थितियों ओर उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया है उनकी कृतियॉ भारत के सर्वाधिक विषाल ओर विस्तृत वर्ग की कृतियॉ है।

प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों में सामाजिक मूल्यों की जड़ता, रुढ़ता, नैतिकता, असमानता, छुआछूत की समस्या, भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय आंदोलन, कृषक समस्या, मानवता, भारतीय संस्कृति, शोषण विधवा विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा आदि विविध विषयों को अपने उपन्यासों का विषय बनाया है।

एक सदी बीत जाने के बाद भी उनके उपन्यास आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य के माध्यम से जिन समस्याओं व मूल्यों का चित्रण किया है। आज भी हम उन्हें उभारने का प्रयत्न कर रहे है। उनके उपन्यास गोदान के मुख्य पात्र 'होरी' व 'धनिया' आज भी गॉव के हर किसान के रुप में मौजूद है तथा उनकी स्थिति आज भी समाज में वैसी ही बनी हुई